गांधी विचारधारा नाटको में ग्राम–समस्या तथा ग्रामोद्वार का चित्रण

*डॉ. हरीश चन्द्र

शोध सारांश

गांधीजी की बुनियादी रचनात्मक कार्यक्रमो की ग्रामोद्वार योजना में नाटककार भी प्रभावित हुए है। महात्मा जी की विचारधारा से प्रेरणा प्राप्त कर ही उनका ध्यान ग्राम सुधार की ओर आकृष्ट हुआ है। ग्राम सुधार की बहुमुखी धाराओं में पंचायत, सहकारिता–आन्दोलन, सफाई, ग्राम–संगठन, ग्रामोद्योग, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक सभी समस्याओं पर आधारित नाटक लिखे गये है। ग्राम जीवन की आर्थिक – विषमता तथा किसानों–मजदूरों की दयनीय विवशता भी इन नाटकों में अभिव्यक्त है। इस दृष्टि से हरिकृष्ण प्रेमकृत 'बन्धन' शिवरामदास गुप्त कृत 'धरतीमाता' वीरसिंह देवकृत 'भूख' तथा सेठ गोविन्ददास कृत 'हिंसा या अहिंसा' उल्लेखनीय कृतियां है। हरिकृष्ण प्रेमी कृत 'बंधन' मे आर्थिक शोषण का चित्रण किया गया है। नाटक में मील–मालिक तथा मजदूरों के संघर्ष का वर्णन है और समस्या का हल गांधी दर्शन के अंहिसात्मक सत्याग्रह से किया गया है। मील–मालिक खजांचीराम पहले तो निर्दयतापुर्वक मजदूरों की न्याय संगत मांगों को ठुकरा देता है, पर अन्त में मजदूरों की कष्ट सहिष्णुता और उनके नेता मोहन के आदर्श चरित्र के कारण खजांचीराम का हृदय–परिवर्तित हो जाता है। नाटककार ने वर्ग संघर्ष का गांधी–नीति के अनुरूप सुझाव प्रस्तुत किया है। मजूदरों के नेता मोहन तथा मील–मालिक खजांचीराम की पुत्री मालती का विवाह कराकर लेखक ने अन्त में यह प्रस्ताव रखा है कि ऊंच–नीच की भावना इस युग मे आधार–रहित है। सेठ गोविन्ददास के 'प्रकाश' नाटक में आर्थिक विषमता की समस्या पर विचार किया गया है। नाटक का नायक प्रकाश पूँजीपतियों का खुला विरोध करता है। भाषण देता है कि जनमत तैयार करता है तथा सत्य समाज की स्थापना कर गांधीजी के आदर्शो को मूलरूप प्रदान करना चाहता है। आर्थिक विषमता तथा ग्राम–समस्या पर लिखे गये वृन्दावनलाल वर्मा के नाटक 'खिलौने की खोज' तथा शिवरामदास गुप्त रचित 'धरतीमाता' नाटक में आदर्शवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। नाटककार मुकुल ने 'अपना गांव' तथा 'जमीन' दोनो ही नाटकों में ग्रामीण–जीवन को चित्रित किया है तथा ग्रामोद्वार की योजना प्रस्तुत की है।

भारतीय ग्राम–जीवन के आदर्शवादी चित्र प्रस्तुत करने वाले भृंगतुपकरी के एकांकी महत्वपूर्ण है। 'दोपहरी', 'देहालिन', 'सब के दाताराम' में ग्राम–सुधार पर बल दिया गया है। महेन्द्र भटनाकर के 'खेतीहर' तथा 'खेलो में अभियान' में ग्रामीणों के दुःख दर्द की कहानी प्रस्तुत की गई है। पं0 देवीदयाल मस्त नव आदर्शवाद तथा सामाजिक निर्माण में आस्था रख अशिक्षित ग्रामीण वर्ग की विद्पताएं उभारने वाले कलाकार है। आपने ग्रामीण जनता के पुनरूद्धार के हेतु परिष्कृत योजनाएं प्रस्तुत की है। उनके आदर्श बापू की भांति व्यावहारिक है। समाज सुधार उनका ध्येय है।

धर्मप्रकाश आनन्द का एकांकी 'दीनू' मजदूरों की गिरी हुई आर्थिक स्थिति, दयनीय अवस्था, पूंजी के

असमान–वितरण पर एक व्यंग्य है।, भुवनेश्वर का 'एक साम्यहीन साम्यवादी' पूंजीपतियों की नैतिक गिरावट और मजदूरों की असमत पर हाथ साफ करने की तुच्छ वासना–लोलुपता पर एक आदर्शवादी एकांकी है। रामचन्द तिवारी का 'बन्दिनी' गरीबी की भयंकरता व नग्नता का एक चित्र उपस्थित रहता है। इसमें आधुनिक औद्योगिक युग की असमान अर्थ–विवरण समस्या तथा उससे उत्पन्न होने वाली विभीषिकओं पर प्रकाश डाला गया है। रतनलाल द्विवेदी का 'दस वर्ष बाद' सन् 1975 की वस्तुस्थिति का काल्पनिक चित्र प्रस्तुत करने वाला आदर्शवादी एकांकी है। यदि गांधी–योजना के अन्तर्गत हम द्रुतगति से उन्नति करते चले, तो अगले सालों में दरिद्रता भारत से निकल जाएगी। किसानों का सुधार होगा, स्वास्थ्य, लोकरूचिका परिष्कार, समृद्धि ओर कृषि में उन्नति हो जाएगी। ग्रामों में सुख–समृद्धि का राज्य होगा, यही इसमें दिखाया गया है। विष्णु प्रभाकर के 'पंचायत', 'जमींदारी उन्मूलन', मजदूर ओर राष्ट्रचरित्र एकांकियों में भी ग्रामीण समस्याओं का आलेखन हुआ है।

***सह–आचार्य**
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, बहारोड़, अलवर (राज.)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजभोग – लक्ष्मीनारायण मिश्र
2. आधुनिक हिन्दी नाटक – डॉ0 नगेन्द्र पृ. 56
3. गरीबों की दुनियॉ – शिवरामदास गुप्त पृ. 194
4. मुक्ति दूत – उदयशंकर भट्ट पृ. 2
5. हमारा स्वाधीनता संग्राम – विष्णु प्रभाकर पृ. 71
6. प्रेम की वेदी – प्रेमचन्द
7. पार्वती – उदयशंकर भट्ट पृ. 65
8. आधीरात – लक्ष्मीनारायण पृ. 45
9. प्रकाश – सेठ गाविन्दराम पृ. 1019.38